Political Theory E | Learning Material
Pol. Sc. 1st Paper
For B.A. 1st yr

Distinction between Politics and Political Science
(राजनीति और राजनीतिशास्त्र में अन्तर)

आमतौर पर राजनीति और राजनीतिशास्त्र के अन्तर के बारे में आम तौर पर गलतफहमी है। राजनीति और राजनीतिशास्त्र को एक ही मानते है। और दोनों का समान अर्थ लगाया जाता है।

राजनीतिशास्त्र के नामकरण में विद्वानों में मतभेद था। प्राचीन यूनानी दार्शनिकों ने राजनीति के अध्ययन से संबंधित विद्या के लिए "राजनीति" शब्द का प्रयोग किया था। इसका प्रयोग वे व्यापक अर्थ में करते थे। आधुनिक विद्वानों में कुछ विद्वान इस विषय को राजनीति का ही नाम देना पसंद किया।

"राजनीति" शब्द के व्यापक अर्थ एवं पृथक विषय के रूप में देखे जाने के कारण "राजनीतिशास्त्र" के अर्थ और प्रयोग में गलतफहमी पैदा हो गयी। राजनीतिशास्त्र के विद्यार्थी इन दोनों शब्दों में विभेद करते हैं, लेकिन आम लोग दोनों को एक ही मानते है। यहां तक की राजनीति में थोड़ा-बहुत भाग लेने वाला हर व्यक्ति अपने को राजनीतिशास्त्र का जानकार मानता है केवल व्यवहारिक ज्ञान के आधार पर ही वह अपने को इस विषय का ज्ञाता मानने लगता है। लेकिन, वास्तविकता यह है कि दोनों में अन्तर है। "राजनीति" व्यवहारिक जीवन में राजनीति की कलाओं और तिकड़मबाजियों का अभ्यास कराता है, सरकार और शासन को चलाता है तथा नीतियों का निर्माण करता है। वही दूसरी ओर राजनीतिशास्त्र विश्व-विद्यालयों, महाविद्यालयों, शिक्षण-संस्थाओं में राजनीति के विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है और ज्ञान की शाखा के

Scanned with CamScanner

रूप में इसे विषय का विकास करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "राजनीति" एक सामाजिक क्रिया है तो राजनीतिशास्त्र उस क्रिया के अध्ययन का क्रमबद्ध ज्ञान है।

राजनीतिशास्त्र राजनीतिक क्रियाओं का एक शैक्षणिक क्षेत्र (Academic Field) है। हर क्रिया के पीछे, चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक कुछ सिद्धान्त होते हैं उन क्रियाओं में भाग लेने वालों के व्यवहार में एक रूपता पाई जाती है, और जाने-अनजाने कुछ नियमों का पालन करते हैं। इन क्रियाओं के संबंध में मनुष्य के व्यवहार में एक रूपता पाई जाती है, हर क्रिया का एक क्रमबद्ध ज्ञान तैयार किया जाता है। इस क्रमबद्ध ज्ञान को उस क्रिया का शैक्षणिक रूप कहा जाता है। राजनीतिशास्त्र भी ऐसा विषय है जो राजनीति क्रियाओं का अध्ययन कर क्रमबद्ध अध्ययन का एक अनुशासन बन गया है। उदाहरण के लिए जिस प्रकार अर्थशास्त्र आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है उसी प्रकार राजनीतिशास्त्र राजनीति क्रियाओं का अध्ययन करता है।

राजनीति और राजनीतिशास्त्र के उद्देश्य में अन्तर :- राजनीति का उद्देश्य शक्ति या सत्ता को प्राप्त करना है। जब की इसके विपरीत राजनीतिशास्त्र राजनीतिक गतिविधियों का विश्लेषण करने और उसके बारे में जानकारी देने की एक क्रिया है। राजनीतिशास्त्र का उद्देश्य मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि करना है। लेकिन आज राजनीतिशास्त्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को सीख देना, जिससे वे राजनीति की दुनिया में सफल हो सकें। राजनीतिशास्त्र को नीति विज्ञान (Policy Science) के रूप में देखा जाने लगा है।

राजनीतिशास्त्र राजनीति का शैक्षणिक पक्ष (Political Science is the academic aspect of Politics) :- राजनीति शास्त्र एक विज्ञान है। अन्य विज्ञानों की भाँति यह नियमों

एकरूपताओं और सिद्धान्तों की खोज में लगा रहता है। जबकि राजनीति के अन्तरगत परिवार गाँव से लेकर पूरा राष्ट्र और विश्व है, जबकि राजनीतिशास्त्र का अध्ययन औपचारिक संस्थाओं खासकर राजनीतिशास्त्र के विभागों में इस के शिक्षकों और शोधकर्ताओं द्वारा होता है।

दोनों अलग-अलग पेशा है (Both are different Professions) — राजनीति के पेशेवरों को राजनीतिज्ञ और राजनीतिशास्त्र के पेशेवरों को राजनीतिशास्त्री कहा जाता है। राजनीतिज्ञों को अनुभव के आधार पर राजनीति को सिख लेते हैं। वे सिद्धान्तों या नियमों की अपेक्षा अपने अनुभवों और सामान्य विवेक पर आधिक निर्भर रहते है। जब कि इसके विपरीत, राजनीतिशास्त्र के लिए एक विशेष ज्ञान की आवश्यकता है। इसके लिए उन्हें शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। यह कहना गलत है कि राजनीतिशास्त्र के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं है, राजनीतिशास्त्री को विशिष्ट और सटीक ज्ञान रखना पड़ता है।

दोनों की पद्धतियों में भिन्नता (Method of both are different)

राजनीतिक एक व्यवहारिक पेशेवर होता है। वह संघर्ष में विजय प्राप्त करने के लिए किसी तरीके को अपनाता है। अपने हित की रक्षा के लिए सत्ता को हथियाने के लिए मानको और नैतिक आचरण को भूल जाता है।

जबकि राजनीतिशास्त्र ज्ञान की एक शाखा है। यह राजनीतिक क्रियाओं घटनाओं के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेता है। पहले कल्पना और तर्क से राजनीति का अध्ययन किया जाता था। दार्शनिक और ऐतिहासिक पद्धतियों को अपनाकर राजनीतिशास्त्री राजनीतिक घटनाओं का विश्लेषण करते थे। व्यवहारवादियों ने राजनीतिशास्त्र को एक विज्ञान का दर्जा देने का बहुत हद तक प्रयास किया है।

मूल्यों के संबंध में दोनों के दृष्टिकोण अलग (They adopt different views about values) राजनीति में आम तौर पर

Scanned with CamScanner

मूल्यों को महत्व दिया जाता है। साधारणतः शासक वर्ग या उसके कर्मचारी प्रचलित नैतिक मूल्यों और आचरण के विरुद्ध जल्दी कोई कदम नहीं उठाते हैं। इनके विरुद्ध कदम उठानेवाला प्रजातंत्र विरोधी या तानाशाह हो सकता है।

इसके विपरीत राजनीतिशास्त्री निष्पक्ष भाव से अपने विषय का अध्ययन-अध्यापन करता है। राजनीतिशास्त्र "अलौकिक शिक्षा का मान्य पेशा" है। जवाहरवादियों ने राजनीति-शास्त्र के अध्ययन में एक तर्क प्रस्तुत किया है कि राजनीतिशास्त्र के रूप में उन्हें अपने विषय का अध्ययन निष्पक्ष भाव से करना चाहिए। उसके व्यावहारिक विचारों या मूल्यों का प्रभाव उसके निष्कर्षों पर नहीं पड़ना चाहिए।

अतः निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि राजनीति और राजनीतिशास्त्र एक सिक्के के दो पहलू हैं। एक दैनिक क्रिया है तो दूसरा उसके अध्ययन का क्रमबद्ध ज्ञान। दोनों का विकास साथ-साथ होता है। शुरू में राजनीति का संबंध केवल राज्य और सरकार से माना जाता था। अतः इसलिए राजनीतिशास्त्र को राज्य और सरकार के अध्ययन का विषय कहा जाता था। आज राजनीति का क्षेत्र विस्तृत हो गया है उसमें केवल राज्य और सरकार से संबंधित क्रियाएँ ही नहीं आतीं, बल्कि राज्य से परे क्रियाओं को भी उसमें विशेष स्थान दिया जाता है। फलतः राजनीतिशास्त्र मनुष्य की सारी राजनीतिक गतिविधियों का अध्ययन करने लगा है चाहे वे सरकार से संबंधित हो या सरकार से परे। यह कहना सही होगा कि राजनीतिशास्त्र राजनीति और सरकार के साथ बदलता रहेगा।

Scanned with CamScanner